किंग

कॉमिक्स

मूल्य 7.00 संख्या 11

गामराज

VERMA

किंग कॉमिक्स पेश करते हैं

मनोरंजक कहानियों का एक और गुलदस्ता

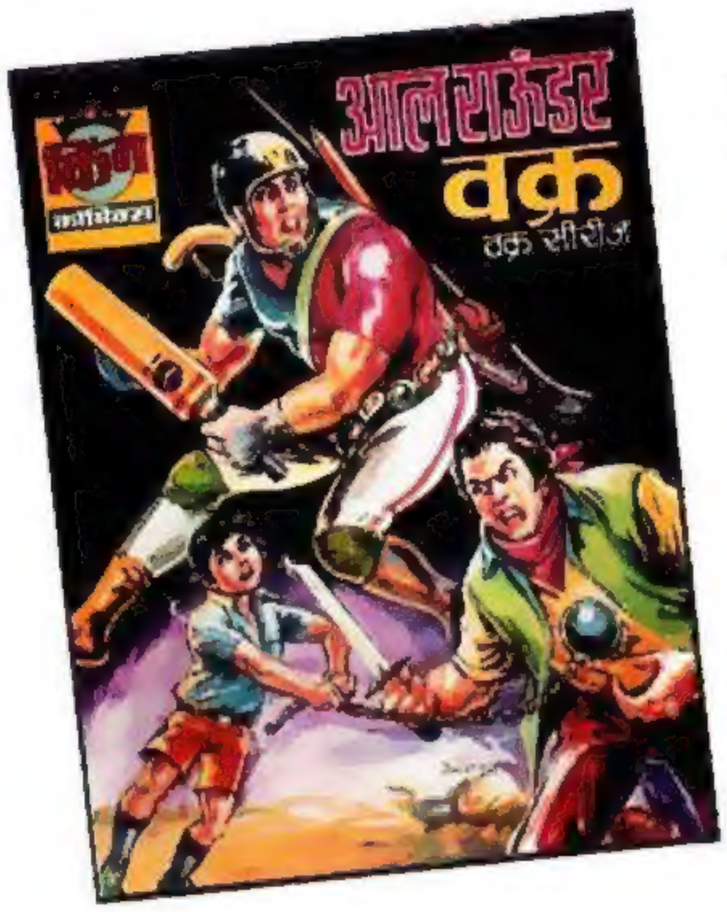

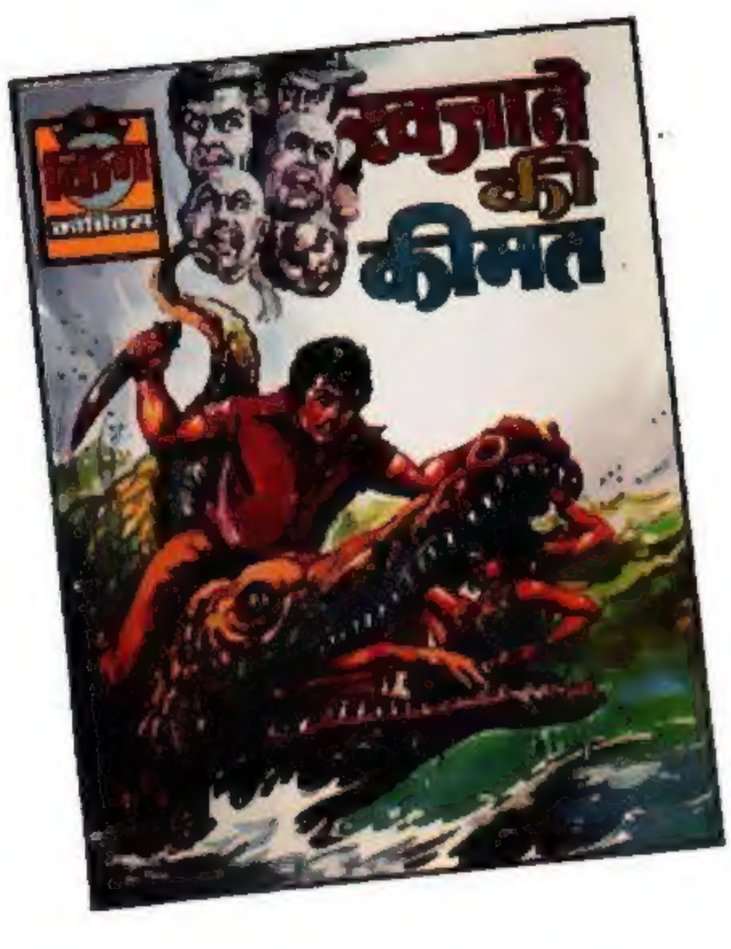

किंग कॉमिक्स के आगामी सैट के छः कॉमिक्स प्रत्येक का मूल्य 7.00

- मैडम किरली (लिजा सीरीज)
- अभेद्य (अभेद्य सीरीज)
- वेगा (वेगा सीरीज)
- स्पोर्टर्स किलर (वक्र सीरीज)
- गमराज और नटवरलाल (गमराज सीरीज)
- कुबड़ा (थ्रिल सीरीज)

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रकाशक : राजा पॉकेट बुक्स 330/1, बुराड़ी, दिल्ली-110009
वितरक : नागराज नावल्टीज 313, दरीबा कलां, दिल्ली-110006

ग़मराज

सपनों का महानगर — बम्बई !

सभी को पनाह देता है ये नगर !

यहां जिन्दगियां संवरती भी हैं, उजड़ती भी !

लेखक:- महेश दत्त शर्मा
सम्पादक:- विवेक मोहन
चित्रांकन:- आकृति फीचर्स

गमों के भी उतने ही नजदीक हैं यहां के लोग, जितने खुशी के !

किन्तु कुर्ला की एक चाल में पला अनाथ यमराज तो मानों गमों की चलती-फिरती एक दुकान ही था—

गमों का बोझ अब नहीं सहा जाता !

हे यमराज ! उठा ले मुझे !

पता नहीं क्या-क्या बड़बड़ाता रहता है ?

किसी ने सच ही कहा है कि मांगे से तो मौत भी नहीं मिलती—

मुझे मौत चाहिए, यमराज !

मौत की तलाश में दर-दर भटक रहा था यमराज लेकिन मौत हमेशा उससे कन्नी काटती रही !

एक कुएं को देख आशा की किरण नजर आई उसे—

यहां मुझे कोई नहीं बचा सकता मौत से।

गमराज ने जैसे ही छलांग लगाने की कोशिश की—

?!?!

अ...र...रे! क्या करते हो भाई ...

...मरने का इरादा है क्या?

तो क्या खाली-पीली कूद रहा था। मुझे बचाने वाले तुम कौन हो?

न जाने कहां-कहां से चले आते हैं।

चल गमराज! कहीं और तलाशते हैं मौत को!

आंय! अबे, मरने का इरादा है तो कोई दूसरा कुआ देख! यहां वैसे ही पानी की शार्टेज है।

आह! तोड़ डाली हड्डियां...

एक जगह –

ये लाइन कैसी है?

चल गमराज, घुसकर तमाशा देख! शायद तेरे मतलब की चीज हासिल हो जाये।

गमराज बीच लाइन में घुसने लगा तो –

बीच में घुस्ता है।

निकालो इसे!

अरे!

पहलवान सूरत प्रसाद ने धर लिया उसे –

क्यों बे! तुझे बड़ी जल्दी है।

काहे की भाई? ये लाइन कैसी है?

तुझे नहीं पता?

मौतानन्द स्वामी मौत का अचूक-मंत्र बेच रहे हैं।

वाह!

मंत्र खरीदना हो तो सबसे पीछे खड़ा हो जा, चल!

आsss

स्वामी मौतानन्द –

लाओ बच्चा, सौ का नोट ! मृत्यु-वान भव।

थैंक्यू स्वामी जी!

गमराज की आंखों में चिन्ता की परछाइयां तैर रही थी---

बड़ी लम्बी लाइन है गमराज यूं तो महीनों में नम्बर आयेगा। फिर तेरे पास तो पैसे भी नहीं हैं।

मंत्र कैसे खरीदेगा?

चल मेरे दिल कहीं और चल गम की दुनिया से दिल भर गया।

रुआंसा गमराज चल पड़ा –

चल भाई, चल ! कोई और जगह तलाश ! मौत भी मुफ्त में नहीं मिलती कहां जा मरूं।

तभी आंखें चमक उठीं उसकी –

पीं-पीं SSS

आह ! ये कार निश्चित ही मुझे यमलोक पहुंचा देगी।

कार में –

उफ ! क्या होगा ? ये तो सामने ही आ गया।

पीं SSS ज़ं SSS

सुपरफास्ट गति से गमराज की ओर बढ़ रही थी वो कार –

तेजी से एक ओर मोड़ते हुए...

थड़ड़ड़ड़ड़

आह!

चारों खाने चित हो गया यमराज-

शायद मैं मर गया हूं।

बौखला उठी थी चालक युवती-

मर गया शायद !?

नहीं...नहीं! कुलबुला रहा है।

मैं कहां हूं ? शायद यमलोक में।

क्या कहा?

पांय लागूं!

आप क्या यमराज की वाइफ हैं जी?

मैं तुझे यमराज की वाइफ नजर आती हूं। मैं सरीता हूं। सरीता लरचानी, यहां के एम. पी. की लड़की!

ओह!

यानी मैं ज़िन्दा हूं।

गलती हो गई जी! माफ कर दीजिए!

माफ किया! क्योंकि वैसे भी तुमने मेरी मदद की है।

मदद ?!

जहां तुम खड़े हो उसके पीछे गहरा गड्ढा था। यदि तुम वहां नहीं खड़े होते तो कार सीधे गड्ढे में जाती।

बू... हू... हू... हू... जान बची और पांच का नोट पाया!

सरीता चली गई—

गमों का मारा गमराज नोट को घूर रहा था—

मौत तेरी किस्मत में नहीं है रे गमराज! भूल जा! भूल जा उसे और ज़िन्दगी को गले लगा ले!

वीक तभी शंकालू सिंह वहां से गुजरा—

बू-हू-हू-

अरे! इसे क्या हुआ? बहुत दुखी लगता है बेचारा!

चलो थोड़ा टाइम पास करते हैं।

रो क्यों रहे हो भाई? कोई सगा-सबंधी मर गया क्या?

नहीं, भइया! मैं तो अपने बचने के गम में मातम मना रहा हूं।

ओह! तो तुम मौत चाहते हो? जिन्दगी से थक कर टूट चुके हो!

हां, भाई! गमों का बोझ गमराज अब और नहीं उठा सकता!

अमां, तो शंकालू के होते फ़िक्र क्यों करते हो, गमराज भाई?

बंदे को मौत के 101 अचूक नुस्खे मालूम हैं।

सच! बता-बता मेरे भाई तेरे पांव पड़ता हूं।

आओ मेरे साथ!

ऐसा नुस्खा बताऊंगा गमराज भाई, कि मरकर भी बन्दे को नहीं भूलेगा!

जीओ, शंकालू! तुम अब तक कहां थे भगवन! तुम्हारी तो इस देश को बहुत जरूरत है।

ज्यादा मक्खन लगाओगे तो मेरा हाजमा खराब हो जायेगा भाई।

लो, लक्कड़ हजम पत्थर भस्म चूर्ण खाओ तब तक मैं दिमाग की लाइब्रेरी से नुस्खों वाली किताब ढूंढ़ लूं!

जल्दी ढूंढो, शंकालू! मौत के इन्तजार में मैं छुआरा हुआ जा रहा हूं।

चूर्ण खाते ही–

आह! सिर चकरा रहा है। मौत मेरी ओर बढ़ रही है, शायद!

आंय! इसे क्या हुआ?

उफ! चूर्ण के धोखे में खटमल मार पाउडर दे दिया! भाग शंकालू, ये मर गया तो लेने के देने पड़ जायेंगे।

अबे ठहर! पांच का नोट तो लेता चल, चौपाटी पर भेल-पूरी खाने के काम आयेगा!

नोट उठाकर फूट लिया शंकालू सिंह–

गमराज के गमों से बेखबर अपनी मस्ती में मस्त थे बम्बई वासी–

ये बॉम्बे शहर हादसों का शहर है...

बम्बई नगरी पर इस वक्त यमपुरी के यमदूत कुण्ड और मुण्ड मंडरा रहे थे–

मुण्ड ये मरे हुए इन्सानों को ढोते-ढोते बहुत थक गये हम!

सच कहते हो, कुण्ड! क्यों न श्रीदेवी की एक फिल्म देख लें। मनोरंजन हो जायेगा।

ना बाबा ना! यमराज को पता चल गया तो गजब हो जायेगा!

चलो, एक न एक दिन तो श्रीदेवी को हमारे चंगुल में फंसना ही है।

लो कुण्ड भाई! बातों ही बातों में हम अपने शिकार तक आ पहुंचे।

अभी लेता हूं इसकी आत्मा को अपनी गिरफ्त में।

ठीक कहते हो! तब यमलोक में ही उसके कारनामें देखेंगे। अभी हमारे ऐसे भाग्य कहां!

अगले पल——

शॉक

कुछ देर बाद यमराज के दरबार में हाजिरी लगा रही थी गमराज की आत्मा—

प्रणाम, देव! ही-ही!

आखिर यमराज ने मेरी प्रार्थना सुन ही ली!

प्रणाम!

इस प्राणी का लेखा-जोखा प्रस्तुत करो, चित्रगुप्त!

मृत्यु के पश्चात ये खुश क्यों है।

जी, देव!

वही खाते पर उंगलियां फिर-

-करने लगी चित्रगुप्त की—

अरे! खाता तो कुछ और बता रहा है।

ये शायद गलत प्राणी को पकड़ लाये।

??

क्या बड़बड़ा रहे हो चित्रगुप्त, बताते क्यों नहीं?

द...देव! यमदूत इस प्राणी को गलती से पकड़ लाये, जबकि ये तो बेहोश ही हुआ था।

जिसे लाना था वो तो ये गमराज है 80 वर्षीय बूढा!

ये कैसे हुआ?

ओह! कुण्ड, मुण्ड तुम्हें इस गलती की सजा मिलेगी!

न... नहीं देव! गलती हमारी नहीं है, बही खाते की है!

हां, देव! पहले हमें यमराज की आयु 25-30 वर्ष लिखी बताई थी!

बू-हू-हू-हू!

अच्छा, तो सारे फसाद की जड़ ये खाता है!

इस बही खाते की आत्मा आ.आ, मेरा मतलब इस खाते को बदल दिया जाये।

इसने पहले भी अनेक गलतियां की हैं!

यमराज से संबोधित इस यमराज—

वत्स यमराज! तुम्हारे अभी खेलने-खाने के दिन हैं। जाओ लौट जाओ!

नहीं! हरगिज नहीं लौटूंगा, माई बाप!

क्या मतलब?

अरे मूर्ख! यहां से लौटने के लिए तो लोग सदा आतुर रहते हैं।

और तू इन्कार कर रहा है।

देव! गलती आपके कर्मचारियों ने की है। उसकी सजा मैं क्यों भुगतूं?

ना बाबा ना! मैं अब ना जाने वाला!

जो आज्ञा, महाराज!

गुस्सा आ गया यमराज को –

स्वामोश, प्राणी! यहां बहस की अनुमति किसी को नहीं है।

सच बोलने की तो है!

और हां, अगर आपने ज़बरदस्ती की तो...

...तो?

तो मैं सुप्रीम पावर-ब्रम्हा, विष्णु, महेश से न्याय की अपील करूंगा।

ये अपील क्या होती है, चित्रगुप्त?

सोच-विचार में खो गये मौत के देवता यमराज–

कैसे पीछा छुड़ाऊं इससे? बड़ा विचित्र मनुष्य है यह!

दुहाई महाप्रभु!

ओए! तू तो बड़ा खतरनाक है रे वत्स!

मैं अब यहां से हिलूंगा भी नहीं।

कुछ नरम पड़ गये यमराज –

देखो, यमराज! कोई जीवित प्राणी तो यहां नहीं रह सकता न! यह विधि-विरुद्ध है अतः तुम्हें लौटना होगा!

नहीं-नहीं-नहीं! मैं हरगिज नहीं लौटूंगा!

लाख कोशिश के बावजूद यमराज अड़ा रहा–

पसीना चुहचुहा आया यमराज के माथे पर—

थोड़ी देर के लिए दरबार की कार्यवाही स्थगित की जाती है। तब तक तुम अपने निर्णय पर पुनः विचार कर लो, गमराज!

जी!

यमराज के जाते ही—

गमराज भाई! तुमने तो हमारे महाराज को भी चिन्तित कर दिया।

वाह! क्या वजनी तर्क थे तुम्हारे!

धन्यवाद! धन्यवाद!

ये बताओ, मुझे यहां से वापस तो नहीं जाना होगा?

जाना तो होगा ही!

पर हां, तुम कुछ वरदान मांग लो तो बात बन सकती है!

आंखें चमक उठी गमराज की—

वरदान! गुड आइडिया!

ये बात अब तक मेरे दिमाग में क्यों नहीं आई थी?

थोड़ी देर बाद यमराज फिर दरबार में आ गये—

हां, तो तुमने क्या फैसला किया, गमराज? वापस जाओगे या...

ठीक है, भगवन! मैं चला जाऊंगा, पर बदले में आपको तीन वरदान देने होंगे।

वरदान! तुम हमें छलना चाहते हो मनुष्य!

गुस्से से लाल हो उठे यमराज-

नरक में सड़ा कर रख दूंगा तुम्हें!

कोई है, ले जाओ इसे!

ठहरिये देव ठहरिये!

चित्रगुप्त काना-फूसी करने लगे यमराज से-

सूझबूझ से काम लीजिए देव! वरदान देने के अलावा और कोई चारा नहीं!

ओह, हां! किसी भी तरह इससे छुटकारा पाना होगा। बड़ा हठी है ये मनुष्य!

बात यमराज की समझ में आ गई-

वरदान मांगो यमराज! तुम्हारी तर्क बुद्धि से हम खुश हुए!

धन्यवाद, देव!

अभी तो दुखी थे।

मैं दुनिया में अनाथ हूं भगवन! आप मुझे पुत्र रूप में स्वीकार करें- यही मेरा पहला वर है।

क्या करूं?? यह क्या मांग लिया इसने किन्तु मैं विवश हूं!

तथास्तु पुत्र!

पिताश्री!

पुत्र यमराज!

अनायास ही यमराज के लिए पुत्रवत स्नेह जागृत हो उठा यमराज के हृदय में –

दुनिया ने तुम्हें सचमुच बहुत सताया है पुत्र!

हां, पिताश्री! आपके सीने से लग सारे कष्ट जाते रहे!

अगला वरदान मांगो, वत्स!

मैं आपसे मिलने जब चाहूं आ सकूं!

स्वयमस्तु!

आखिरी वरदान मांगो वत्स!

आपका पुत्र होने के नाते मेरे पास भी आप ही की तरह का एक वाहन होना चाहिए, पिताश्री!

तुम्हारा संकेत भृषबराज की ओर है पुत्र!

जी हां, पिताश्री! तीसरे वरदान में मुझे भृषबराज चाहिए! आपमें मुझमें कुछ तो समानता होनी चाहिए।

पुत्र यमराज! उसके बदले कुछ और मांग लो। वो तो हमारी पहचान है। उसी की वजह से मृत्युलोक-वासी हमसे थर्राते हैं।

GARAGE

नहीं पिताश्री! मुझे भृषबराज ही चाहिए!

ओह!

इस बार फिर चित्रगुप्त ने युक्ति सुझाई-

इसे यमुण्डा क्यों नहीं दे देते, भगवन! उसमें भी तो भृषबराज जैसी ही खूबियां हैं।

यह उचित रहेगा।

उठो, गमराज! वृषभराज की बजाय हम तुम्हें उसका पुत्र यमुण्डा देते हैं शक्तियों के मामले में दोनों बराबर हैं।

हुम्म! ये भी ठीक है बाप के पास बाप! बेटे के पास बेटा!

यमुण्डा के निकट पहुंचा गमराज-

पुच्च! बड़ा सुन्दर है।

और करामाती भी! तुम्हारे यमुण्डा कहते ही प्रकट होगा ये! फिर तुम इससे मनचाहे काम ले सकते हो।

फिर थोड़ी देर बाद—

अब अनुमति दीजिए पिताश्री!

जाओ पुत्र! मेरा आशीर्वाद है।

ठीक इसी वक्त, धरती पर बेहोश पड़ा यमराज कराह उठा–

आह! कैसा सपना देख रहा था मैं?

यमुण्डा!

यमुण्डा कहते ही–

आज्ञा स्वामी?

त...तुम कौन हो तुम?

आपका अनुचर यमुण्डा, जिसे आप यमराज से वरदान में मांग लाये!

जी-जी मैं हकीकत में यमलोक हो आया!

निःसंदेह स्वामी! अब आप यमराज के पुत्र हैं।

वाह! मजा आ गया यमुण्डा!

अब तुम पहले मुझे बम्बई की सैर कराओ!

जी स्वामी!

वाह! भैंसे की सैर का आनंद ही अलग है।

?!?!

ही-ही-ही!

मूर्ख!

एक जगह—

रुको यमुण्डा!

आंय! ये तो गमराज है।

भाग बेटा शंकालू! पकड़ा गया तो राम-नाम सत हो जायेगी!

शंकालू रुको, शंकालू!

अबे, ठहर जा मेरे बाप! काय को दौड़ा के जान निकाल रिया है। हम्फ-हम्फ-

हम्फ-हम्फ- मैं कोई इतना मूर्ख थोड़े ही हूं जो रुक जाऊंगा!

धड़ाम

ये पकड़ा गया!

आह!

अरे! गमराज भाई तुम?

हां, मैं! मुझे देख तुम दौड़े क्यों शंकालू?

वरदान मिलने का पूरा किस्सा बयान कर दिया गमराज ने—

व-वो खाने के बाद मुझे जौगिंग की आदत है न, इसलिए! तुम्हें तो मैंने देखा ही नहीं था!

समझा! तुम्हारा चूर्ण तो कमाल था शंकालू, उसके कारण यमलोक में मुझे...

सुनकर—

वाह, गुरू? देखा इस बन्दे के चूर्ण का कमाल! अब तो मुझे अपना चेला स्वीकार कर लीजिये।

स्वीकार है चेले शंकालू!

चेला ही बनने में भलाई है। गुरू के चक्कर में तो गुड़ रह जाऊंगा!

अब अपने यमुण्डा को तो बुलवाइये, गुरू! सैर करने को मन कर रहा है।

अभी लो!

भ ना क

यमुण्डा!

यमुण्डा हाजिर है स्वामी!

इसका नाम यमुण्डा क्यों है, गुण्डा क्यों नहीं!

फिर शंका की शंकालू तूने अबे मूर्ख! ये कोई भी रूप रख सकता है।

सच! कार भी!

लेकिन कार में बैठे तो दुर्घटना हो सकती है। हम मर भी सकते हैं।

शुभ-शुभ बोल, ओए! देख, यमुण्डा कार में बदल चुका है। आ, सैर को चलें!

डरते-डरते कार में बैठा शंकालू—

धीरे, गुरु! भेड़ पहली का है वो भी टूट गई तो बीवी को क्या कहूंगा?

थाय्य! मैं भी तो पहली बार चला रहा हूं। मैं तो नहीं डर रहा।

एक जगह—

ये कौन है गुरू?

राम के मारे! इनकी गमगीन सूरतें देख मेरा कलेजा मुंह को आ रहा है।

तुम्हें क्या कष्ट है, युवक? इतने उदास क्यों हो?

बसंती घर से भाग गई! सुबक... सुबक...

च...च...च... तुम्हें अपनी पत्नी से बहुत प्यार है!

पत्नी!? बसंती तो मेरी बिल्ली का नाम है।

आंय!

तभी एक चीख सुनकर चौंक पड़े दोनों–

?!?

कोई मुसीबत में है!

आओ, देखते हैं!

क्या हुआ बहन? क्यों रो रही हो?

बू-हू-हू-हू

?!?!

सुधा–

रवीऽऽ रवी..

मेरे बच्चे रिंकू को बंदर ले गया।

मम्मी!

तुमने क्यों ले जाने दिया! गिरकर मर गया तो!

नहींऽऽ मेरा रिंकू!

शांत हो जाओ बहन! मैं कुछ करता हूं।

अगले पल, बन्दरों की तरह पेड़ पर चढ़ने लगा गमराज-

बच्चा लेने आ रहा है। अभी देखता हूं सुसरे को।

देखता हूं, रिंकू को कैसे नहीं छोड़ता!

?!?

अभी गमराज आधा भी नहीं चढ़ पाया था कि-

स्वी-स्वी-

आह! बन्दर की औलाद मार डाला!

संभल नहीं सका गमराज-

आह!

अई मोरी अम्मा!

मार डाला गुरू!

फूलों से सजाने वाली-

मुझे इसके बंदर होने पर शंका हो रही है। इसे फलों का लालच देकर बुलाओ!

ना-ना! फल दे दिये तो हमारी पिकनिक का क्या होगा।

हां, आस-पास फलों की दुकान भी नहीं है।

ठीक तभी, मौके का लाभ उठाकर फलों पर झपट्टा मारा बन्दर ने—

स्वी-स्वी-एवी...

रिंकू को समुद्र किनारे छोड़ दिया था उसने—

रिंकू!

ओह!

मम्मी!

उनके पहुंचने से पहले ही तेज लहरें बहा ले गई रिंकू को-

बचाओ! मैं तो तैराना भी नहीं जानती!

मैं भी नहीं जानता, वरना अब तक कब का कूद चुका होता।

मैं थोड़ा-बहुत जानता हूं, जब बारिश का पानी सड़क पर भर जाता था तब मैं उसमें तैराता था।

संभल के गुरु! तुम डूबे तो कोई बचाने वाला भी नहीं है।

झपाक

सुक्क... सुक्क...

जल्द ही रिंकू तक आ पहुंचा गमराज-

गुलप... गुलप...

किनारे पर—

य...ये तो आंखें ही नहीं खोल रहा!

रिंकू! आंखें खोल, मेरे बेटे!

!?!?

गया काम से शायद!

बहन! तुम्हारा रिंकू क्या इतना नेक था जो स्वर्गवास हो गया? अरे, नरकवास भी तो हो सकता है।

चुप्प, ओए! वो बेचारी गम में मरी जा रही है और तुझे, अपनी शंकाओं की पड़ी है।

दहाड़ मार कर रोने लगी सुधा—

बु-हू-हू-- स्वर्गवास हो गया मेरे रिंकू का!

सुधा को सांत्वना दी गमराज ने—

पुच्च मत रोओ बहन! इसका स्वर्गवास हुआ हो या वनवास, मैं वापस लाऊंगा इसे!

पर कैसे?

बस देखती रहो कुरु की करामात!

यमुण्डा

अगले पल—

आज्ञा स्वामी!

यमलोक चलो!

?!?

द्रुत गति से चल पड़ा यमुण्डा–

धड़ाम

य–यमलोक! म– मैं कोई सपना तो नहीं देख रही?

जल्दी लौटना गुरु!

रास्ते में–

ये कौन सी जगह है यमुण्डा!

स्वर्गलोक! स्वर्गवासी यहीं विश्राम करते हैं स्वामी!

स्वर्ग में प्रविष्ट हो गया यमुण्डा–

फिर तो यहीं चलो! रिंकू का भी तो स्वर्गवास हुआ है। वह यहीं होगा।

वाह! कितना भव्य है।

किसी ने भी नहीं रोका उसे–

सारा स्वर्ग खंगाल डाला उन्होंने, रिंकू नहीं मिला! तभी, घण्टी की आवाज सुन चौंक पड़ा गमराज–

चौंकिये मत स्वामी! ये तो खाने की घण्टी है।

भोजनालय

खानाऽऽ

मुझे भी भूख लगने लगी। स्वर्ग का भोजन चख लेने में कोई हर्ज नहीं।

अहोभाग्य, जो आपके दर्शन हुए!

स्वागत है यमपुत्र!

वैरी स्वीट यू आर! थैंक्यू!

अन्दर गमराज के हाथ मे एक लम्बी चम्मच बांध दी गई—

वहां जाइये आप!

इससे मैं खाना कैसे खा पाऊंगा मेरी मां!

पीछे पलटा तो सारी बात समझ गया वो—

सभी भोजनकर्त्ता एक दूसरे को बड़े प्रेम से भोजन करा रहे थे! आपसी सहयोग की भावना काम कर रही थी वहां—

ओह! कितना प्यारा अंदाज है खाने का!

आइये, बैठिये आप!

एक चेयर पर आ बैठा गमराज—

पहले आप!

नहीं, पहले आप! आप हमारे मेहमान हैं।

झक कर खाया गमराज ने—

तदोपरान्त—

चल भई, यमुण्डा! यहां तो नहीं मिल सका रिक्रू! हां, स्वादिष्ट भोजन जरूर मिला।

इस वक्त वो नरकलोक के निकट से गुजर रहे थे—

ये नरक लोक है स्वामी! यहां नरकवासी सज़ा पाते हैं।

ओह! कहीं रिंकू यहीं न हो।

यमुण्डा

समझ गया स्वामी!

संकेत पाकर नरक लोक में बढ़ चला यमुण्डा—

आऽऽ

ईऽऽऽ

डरिये मत, स्वामी! ये तो आपका स्वागत कर रहे हैं।

उफ! इन्हें क्या हुआ है, यमुण्डा?

अपने कर्मों की सज़ा भोग रहे हैं, स्वामी!

उफ! वापस चलो, यमुण्डा! मेरा तो दम घुटने लगा।

भोजनालय

स्वामी! यहां के भोजनालय को भी देखते चलिए। रिंकू मिल जावे शायद!

भोजनालय में मची थी मार-काट—

पहले मैं खाऊंगा!

नहीं मैं!

ओह! यही अन्तर है स्वर्ग और नरक में लालच ने इन्हें नरकवासी बनाया!

घबराकर उल्टे पांव भोजनालय से बाहर आ गया यमराज—

अब फौरन यमलोक चलो यमुण्डा पिताश्री से रिंकू के बारे में पता करना होगा!

यमराज को देख चौंक उठे यमराज—

पुत्र यमराज तुम?

जी हां, पिताश्री! मैं रिंकू की खोज में यहां आया हूं।

आज उसका स्वर्गवास या नरकवास हो गया है।

रिंकू!

लेकिन इस नाम का तो कोई प्राणी आज हमारे दरबार में नहीं लाया गया।

पिताश्री! आप पता करके बताइये न, प्लीज!

यमराज ने ताली बजाई—

ठीक है! हम चित्रगुप्त से पूछते हैं!

ये प्लीज क्या बला है! न जाने क्या-क्या बोलता है ये!

अगले पल, यम आइने में चित्रगुप्त प्रकट हुए—

मुझे क्यों याद किया देव!

दरबो! ये रिंकू वाला क्या मामला है? मर कर कहां क्या वो!

थोड़ी देर बाद चौंका देने वाली रिपोर्ट दी चित्रगुप्त ने---

रिंकू तो जीवित है, देव! दरअसल ज्यादा पानी पी जाने के कारण थोड़ी देर के लिए उसकी सांस रुक गई थी।

सुबलिया, पुत्र गमराज!

ओह!

जी हां पिताश्री! आपको व्यर्थ ही कष्ट दिया!

अब मुझे आज्ञा दीजिये! प्रणाम!

प्रणाम पुत्र! चिरायु भवः

कुछ समय बाद वह पृथ्वी पर था-

शंकालू! वो स्त्री कहां है?

रिंकू के होश में आते ही फूट ली। थैंक्यू भी नहीं दे गई।

कोई बात नहीं! थैंक्यू तुम्हें मैं दे देता हूं।

वैसे गुरु! यमलोक का सफर कैसा रहा?

बढ़िया! आओ, रास्ते में बताऊंगा!

दोनों चल पड़े अब उनके जीवन का एक ही उद्देश्य था- दुख और गम में डूबे लोगों को सहारा देना-

अच्छा! बॉय, दोस्तो! अगले अंक में फिर मिलेंगे!

मुझे तो शक है!

अभेद्य

किंग कॉमिक्स में अभेध सीरीज का जोरदार कॉमिक्स

तुम्हारे अरमानों को धूल में मिलाने और तुम सबको एक तड़पती और कराहती जिंदगी का उपहार देने आया हूं क्योंकि मैं हूं...

किंग कॉमिक्स पेश करते हैं

ब्लाइंड डैथ

सीरीज का

एक अनोखा धधकता हुआ कॉमिक्स

वनमैनआर्मी

मुद्रकः गोयल आफसैट वर्कस दिल्ली 33 दूरभाष 7211428

हा हा हा हा वक्र विनर प्वाइंट की तरफ तेजी से बढ़ने वाले उन तीन खिलाड़ियों में से एक खिलाड़ी मेरा शिकार है। जिसकी "स्की" के नीचे मैंने माइक्रो टाईम बम छिपा रखा है जो विनर...

...प्वाइंट पर पहुंचते ही फट जाएगा। अपने शिकार को बचाने का मैं तुझे पूरा मौका दे रहा हूं जाओ और उन तीनों में से वह खिलाड़ी ढूंढ़ लो जो मेरा शिकार है।...

...और बचा सकते हो तो बचा लो उसे। हा हा हा।

किंग कॉमिक्स में वक्र सीरीज का स्नोटर्फ किलर

A.H.W. Tiger Series

किंग कॉमिक्स में लिजा सीरीज का एटमी धमाका

मैडम किलर

लिजा की एक
जबरदस्त टक्कर का परिणाम
जानने के लिए पढ़ना
न भूलें–